CHAPTER 8

BUDDHIST STUDIES

Doctoral Theses

01. AGGARWAL (Rita)
Role of Xuanzang in the Enrichment of Buddhist Learning: An Appraisal.
Supervisor: Dr. Satyendra Kumar Pandey
Th 26560

Abstract

Xuanzang made a sixteen-year (629-645 C.E.) long journey to bring Buddhist teachings from India to China. His visit to India was an important event during the reign of king Harṣavardhana. He reached here during the prime years of Nālandā University and studied there for years. Indian history is much indebted to this Chinese traveler for the valuable accounts he left behind with many details of the political, religious, economic, and social conditions of those days. Xuanzang took with him from India 150 pieces of the bodily relics of Buddha, a large no. of Buddha images in gold, silver and sandalwood and above all, 657 volumes of valuable manuscripts, carried by 20 horses of his escort party. Back in his home in China, he set himself to translating some of those manuscripts into the Chinese language, assisted by several scholars. About 75 Buddhist works were translated during his lifetime which proved immense value to the people of China and simultaneously he established the Consciousness school also known as Fa-Hsiang school in China. He played a significant role in establishing diplomatic ties between ancient India and China. Xuanzang role is immeasurable in terms of his immense contribution to the enhancement of Buddhist learning in China. In order to execute this research work, the research methods of textual study and critical analysis of different sources have been adopted. For that purpose, the Thesis has been divided into six chapters including the Introduction and conclusion, following are the chapters: 1) Introduction, 2) The Illustrious chronicles of formidable Xuanzang, 3) Xuanzang's learning at Nalanda, 4) Xuanzang's role in Buddhist Scripture Translation, 5) Xuanzang's role in establishing Fa-Hsiang School and Diplomatic Ties, and 6) Conclusion.

Contents

1. Introduction 2. The illustrious chronicles of formidable Xuanzang 3. Xuanzang's learning at Nalanda 4. Xuanzang's role in Buddhist scripture translation 5. Xuanzang's role in establishing fahsiang school and diplomatic ties. Conclusuion and Bibliography.

02. अवनिन्द्र कुमार
भारतीय-दर्शन में ध्यान परंपरा ।
निर्देशिका: डॉ एल बी स्वर्णकार
Th 26502

सारांश

विश्व के प्रमुख धर्मों के दर्शन और उसमें समाहित ध्यान के इतिहास के अध्यन्न से यह स्पष्ट है की वस्तुत: सभी धर्मों का आधार ध्यान है, जिसका मुख्य उदेश्य मनुष्यके भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन की परिष्कृत केआर उसे सुसंस्कृत बनाना है । इसमें जीवन की वास्तविकताओं का बहुआयामी संदर्भ समाहित है हमारा विश्व विभिन धर्मों , जतियों एवं समुदायों का सम्मिश्रण है। फिर भी हमारी संवेदनाएँ , सुख दुख । अनुभूतियाँ, स्वभाव आदि एक जैसे हैं अत: विभिन धर्मों में व्याप्त दर्शन एवं ध्यान के माध्यम से मनुष्यों में व्याप्त विकारों को दूर केआर, उसके मन की निर्मल एवं उदार बनाया जा सकता है। ध्यान के माध्यम से मनुष्य अपने चंचल मन को नियंत्रित केआर सकता है। फलत: हम अपने मनोविकारों की दूर केआर एक स्वस्थ एवं आदर्श जीवन जी सकते है। विश्व –दर्शन में सभी ध्यान: तुलनात्मक इतिहास, दर्शन एवं मनोचिकित्सा " विषय का अनुशीलन केरने पीआर बहुत सारे तथ्य उभरकर सामने आये हैं, जिसे निष्कर्ष के रूप में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। हमारे विश्व के सभी लोग प्राय: किसी न किसी (सनातन धर्म), जैन धर्म , बौद्ध धर्म , पार्सि-धर्म, यहूदी-धर्म, कन्फूशियस –धर्म , शिन्तो- धर्म, ताओ धर्म, ईसाई-धर्म, सिख-धर्म आदि के उपासक हो सकते है। सभी धर्मों मैं महान दार्शनिक ऋषियों एवं संतों का जीवन दर्शन समाहित है । धर्मों के दर्शन एवं ध्यान के विकास में उनका योगदान मौलिक, विशिष्ट एवं अदितीय है । उन महापुरुषों ने अपने अनुभव एवं सृजनात्मक्ता से मानव सेवा केआर समाज में व्याप्त गुण दोषों एवं उनके विभिन आयामों की ओर लोगो का ध्यान आकृष्ट किया है ।

विषय सूची

1. प्रस्तावना 2. बौद्ध धर्म एवं अन्य सभी धर्मों में ध्यान का उद्भव का इतिहास 3. दर्शन (ध्यान की विधि: सभी धर्मों में) 4. मनोवैज्ञानिक (ध्यान की वर्तमान संधार्भ में उपचारात्मक उपयोगिता) 5. उपसंहार और ग्रंथनुक्रमणिका ।

03. घनश्याम पंडित
सम्राट अशोक और आधुनिक प्रतिरूप: विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. भुवन कुमार झा
Th 26566

सारांश

अपने शोध के दौरान हमने देखा की सम्राट अशोक की सभी नीतियाँ सभी संदर्भों में महत्वपूर्ण रही है। या यह कहा जा सकता है की वर्तमान समय में अशोक को भिन्न भिन्न संदर्भों में अनेक आधुनिक क्षेत्रों में दर्शाया गया है इस तरह स्पष्ट है कि अशोक कि धम्म नीति किसी भी धर्म या परिसिथतियों से प्रभावित क्यों न रही हो लेकिन इस नीति ने समराज्य के प्रशासनिक , विदेशियों के साथ संबंध, सामाजिक नैतिक सिदन्तों के रूप मैं महतपुर्ण भूमिका अदा की है। इसी तरह इसका प्रभाव सम्राट की विभिन्न नीतियों मैं स्पष्ट नजर आता है। इसका सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह था की इस नीति ने विभिन्न संप्रदायों विचार प्रदान किया । इस विचार ने उनको अपने हितों और विश्वासों से उपर उठकर सोचने का अवसर प्रदान किया। जो विभिन्न जतियों, धर्मों ,पेशों , शहरी व रमीं स्तर के इत्यादि के कारण समूहों में विभक्त थे। आपसी समंजस्य ओ सौहर्द्ता की नीति ने उनके मधी विभिन्न नैतिक बिन्दुओं का संचार कर एकता की भावना कायम की । इसके आधार पीआर अशोक ने एक अखिल भारतीय साम्राज्य को खड़ा किया. इसके साथ ही यह भी कहा जा सकता है की अशोक की धम्म नीति नैतिक सिद्धांतों का एक समुच्चय था । जिसमे पशु बाली की निंदा, अहिसा की नीति का पालन, बड़ों का आदर-सत्कार, प्रम ई सौहर्द्ता से रहना और विभिन्न धर्मों के बीच सहिष्णुता इत्यादि बिन्दुयोन का वर्णन था। इन सभी का वर्णन धर्मों अशोक के विभिन्न अभिलेखों में किया गया है । इस तरह इन सिद्धांतों के माध्यम से समाज में अच्छी व नैतिक बिन्दुयों के संचार पीआर बल दिया गया था । जिसमे परम्पराएँ व नियम गतिशील हो रही हैं।तो उन्होने अपने अनुसार सही नियमों की एक सहिंता समाज के सभी धर्मों के लोगों के लिय तैयार करवाई । यह नियम उसके आदेशों के रूप मैं अभिलेखों के माध्यम से साम्राज्य के विभिन्न भागों में दर्ज किए गए।

विषय सूची

1. भूमीका 2. अशोक और धम्म का विश्लेषण 3. आधुनिक खोज: 19वीं शताब्दी/ 20वीं शताब्दी एएसआई 4 बौद्ध विद्वानों व इतिहासकारो द्वारा 20वीं शताब्दी के शुरू में विवेचन 5. स्वतंत्र भारत में इतिहासकारों द्वारा विश्लेषण. 6 विजूअल मीडिया एवं साहित्य में सम्राट अशोक 6 निष्कर्ष एवं संदर्भ ग्रंथ सूची

04. HUE (Nguyen Thi)
Buddhist Perspective on Conflict Resolution.
Supervisiors: Prof. R.K. Singhal and Prof. K.T. Sarao
Th 27006

Abstract

The historical Shakyamuni Buddha lived, attained enlightenment, and delivered his messages of peace and happiness in the Indian sub-continence more than 2,500 years ago. His messages are still relevant to the present situations of modern consumer society and a globalised world. He proclaimed that the very purpose of human life is to be „happy", not anything else, in this very life, not the life after. So, during the Dhamma career, the Buddha models his educational system of spiritual transformation on the basics of dukkha and cessation of dukkha. With this direction, the Buddha identified dukkha (unsatisfied/suffering) as the human status and showed how to overcome it. He recognised that while ignorance (*avijjā*) binds people to endless frustration and suffering, only the development of understanding (*paññā*) is the way to peace and happiness. The Buddha also shows that we all are equal in suffering and liberation; we have the same potential for transformation and the same right to spiritual freedom. We all seek happiness and avoid individual suffering and fear of social crisis. Conflict and violence have plagued humankind from time immemorial, leaving the annuals of history stained with blood. While the human heart has constantly stirred with the yearning for peace and harmony, the method to satisfy this yearning have ever proved elusive. A moving passage in Buddhist scripture testifies to this disparity between our aspirations for peace and the stark reality of perpetual conflict. On one occasion, it is said that Sakka, the ruler of the gods, visited the Buddha and asked the anguished question: "Why is it that when people wish to live in peace, without hatred or enmity, they are everywhere embroiled in hatred and enmity?" (DN 21) The same question rings down the ages, and it could be asked with equal urgency about many trouble spots in today"s world. As we know, human society nowadays is encountering many crises. One of the reasons is the unbalanced development of the economy, which aims only for production and advantages. We are promoting a consumer society and almost ignoring the development of a moral and spiritual way of life. For Buddhism, this course of development employs and exaggerates the desire, craving (*tanhā*) and grasping (*upādāna*) in human psychology and thus has brought severe pollution for the environment, ethical and social crises, unhealthy lifestyles and diseases. Buddhism has warned about the destructive nature of desires underlined in almost of social conflicts.

Contents

1. Understanding of conflict and its Causes 2. Dimensions of Conflict and its Cause as illustrated in Early Buddhist Texts 3. Conflict Resolutions in Early Buddhist Texrts 4.Doctrinal Foundation for Conflict Resolution. Conclusion and References.

05. जैन (शैंकी)

पश्चमी हिमालय के बौद्ध नाट्य तथा नाटकीय प्राय विधाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण।

निर्देशक : प्रोफ. अमरजीव लोचन

Th 27206

सारांश

हिमालय वैश्विक स्तरअपनी सांस्कृतिक विविधताओं के लिए प्रसिद्ध रहा है। इसका विषय भौगोलिक परिवेश अनाघ्रत प्रकृतिक सौंदर्य तथा सादगी युक्त जनमानसीय भूखंड की विभिन घाटियों के जीवन में विलक्षण विविधता पाई जाती है । जोकि उनके रहन सहन, खाने पीने, रीति रिवाज और विभिन कला विधाओं में प्रलक्षित होती है।इसी वजह से यह पाठकों की रुचि एवं जिज्ञासा का विषय है । मुखी तौर पर पश्चिमी हिमालय का भीतरी भाग जिसमें लद्दाख किनौर के क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रों मैं वास केरने वाली अधिकांश जनसंख्या जंजातियाँ है। अपने उत्कर्ष काल प्रभावशाली रहने के कारण इंका सांस्कृतिक परिवेश गौर्व्शली एवं स्मृद्ध है। पश्चिमी हिमालय के जन-जातीय क्षेत्र लद्दाख, लाहौल, सिप्ति और किनौर म्विन बौद्ध विश्वासों के प्रभाव में नाट्य –विधा परंपरित नतयोन में केवल लामावाद के निगमपा मत को विध्यात्म्क मान्यताओं से उदरित बौद्ध मिथकों का ही निरूपण हुआ है । रूढ़ विध्यात्मक परम्पराओं की जकड़ मैं उन नाटकों में किसी प्रकार का भी परिवर्तन मान्य भी है। अत : उनमे विषय-निर्वाह, प्रदर्शन शैली ,वेषभूषा , अनय संबंदीत उपकरण और वाद्य –शैली और वाद्य –यंत्र आदि सभी कुछ परंपरागत रूप से अपरिवर्तित ही चले आ रहे है।

विषय सूची

1. पश्चिमी हिमालय का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य 2. पश्चिमी हिमालय में बौद्ध संस्कृति एवं दर्शन 3। पश्चिमी हिमालय के बौद्ध नाट्य 4. पश्चिमी हिमालय की बाउध नाते प्राय विधाएँ 5. पश्चिमी हिमालय के बौद्ध नाते एवं नाटकीय प्रायविधाओं में अंतर्निहित बौद्ध दर्शन। उपसंहार और संदर्भ ग्रंथ सूची ।

06. Kaur (Simerjit)

Niyama: the regulatory factor of cosmos.

Supervisor: Prof. Subhra Barua Pavagadhi

Th 26563

Abstract

Everything that surrounds us, from the tiniest particle to the largest, from nearest planets to distant galaxies, the air, water, time, space, man, animals, and everything that exists is the part of the Universe (cosmos). Over the centuries, various attempts made by many the scientists, historians, philosophers, religious, and other scholars to read the picture of cosmos (universe). Quintessentially, they all ended up highlighting the different views and elucidating the varied lists of answers to the questions, like "Did the universe have a beginning, and if so, what had happened just before then? Was there something else before the becoming of universe or cosmos? What is the nature of time? Will it ever end? Can we go back in time? Where did we come from? Moreover, why is the universe the way it is right now? Is the origin and its evolutionary process same or different from each other? Does this origin and evolution influence and regulate the material and mental phenomenon, if yes, how? However, the recent discoveries do strive to provide answers to these longstanding questions, but still lack in giving a concrete answer to satisfy the quest of all. With this view the present study takes into consideration the hitherto list of longstanding questions dealing with the cosmic origin and its evolutionary process, and tries to find their answers in the form of Buddhist concept "*Niyāma*" as the regulatory factor of the cosmos. The intended work drafts five chapters including the introduction and the conclusion by following the literary research method in order to find out whether the cosmos origin and evolution is self-caused, created by God or certain particles, etc with special reference

to make an evaluative study of the Buddhist concept *Niyāma*, as to how it regulates origin and evolution of the cosmic components, the mind and matter.

Contents

1. Introduction 2. The Law of cosmic order 3. Niyama: the Buddhist Law of cosmic order 4. The modes of the arising of the cosmic constituents 5. The relevance of understanding the Niyama: the regulatory factor of the cosmos.Conclusion, Biblography and Appendix.

07. मौर्या (राम विलास)
अष्ट महाप्रातिहार्य- बौद्ध तीर्थ यात्रा का उद्भव एवं विकास।
निर्देशक : डॉ राजमंगल यादव
Th 26564

सारांश

ईसा पूर्व छठी शताब्दी का काल धार्मिक दृष्टि से क्रांति अथवा महापरिवर्तन का काल मन जाता है। इस समय परंपरा वैदिक धर्म एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों, पाखंडों, कुप्रथाओं, छुआछूत, उच-नीच आदि के विरुद्ध आंदोलन उठ खड़ा हुआ।यह आंदोलन कोई आकस्मिक घटना नही था, व्रण यह चीर काल एसडबल्यू संचिन्त हो रहे असंतोषों की ही चरम परिणति थी। समय के प्रवाह के साथ नवीन विचारधारा का आविर्भाव हुआ। ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेतर श्रमणओं एवं परिव्राजकों आदि के अनेक संप्रदाय असितत्व में आए जिन्होंने मतों एवं वादों का प्रचार किया । एसे ही धार्मिक उथल-पुथल के युग में बाउध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध का आविर्भाव हुआ। गौतम बुद्धके आविर्भाव के समय तत्कालीन सामाजिक वातावरण वैदिक संस्कृति से ओत प्रोत था । उस समय वैदिक कर्म कांड और यज्ञों में पशुबलि का प्रचलन था।इन यज्ञों एवं पशुओं की बाली को स्वर्ग की प्राप्ति का माध्यम माना जाना था। इस विषय में प्रोफ. राघवाचार्य का कथन है की बुध के आविर्भाव से ठीक पहले का समय भारतीयों का सर्वाधिक अंधकरमय युग था। बुद्ध के जीवन और उपदेशों से जुड़े स्थल जहां पर बुद्ध ने अपने जीवन की 44 वर्षा वास व्यतीत क्यी थे, यह सारे स्थान उत्तर प्रदेश तथा बिहार तक सीमित है। यह सभी स्थल वर्तमान समय में बाउध तीर्थ स्थल हैं बुद्ध के जीवन से संबन्धित महतपुर्ण चार स्थल ललुमिन्नी, बोधगया सारनाथ,और कुशीनगर है। जो बोध धरम के प्रमुख तीर्थ स्थल का रूप ले चुके हैं। ये चारों स्थल क्रमश: बुद्ध के जनम संबोधी, धर्मचक्रपरवर्तन और महपरिनिरवान से संबन्धित है।

विषय सूची

1. प्रस्तावना 2. बौद्ध धर्म और अष्ट महाप्रातिहार्य 3 अष्ट महाप्रातिहार्य स्थलों का पुरातात्विक सर्वेक्षण 4. अष्ट महाप्रातिहार्य सांस्कृतिक परिपेक्ष्य 5. अष्ट महाप्रातिहार्य बौद्ध तीर्थ स्थलों का महत्व पर्यटन के परिप्रेक्ष्य में. 6 उपसंहार, संधार्भ ग्रंथ सूची एवं परिशिष्ट।

08. PABBI (Tanushrree)
Bhagavad Gita, Bhakti Movement and Indian Buddhism: A Study of the Connecting Contours and Their Impact on Mass Communication.
Supervisor: Dr. Sushmita
Th 26565

Abstract

The Bhakti Movement embodied the aesthetics of the ancient Hindu tradition. Bhakti is a firm, unwavering, and unwavering love of God that surpasses all other forms of assion and attachment and is founded on and motivated by a complete understanding of His transcendent magnificence. This chapter described the numerous cycles and phases during which the Religion spread throughout ancient India, transforming the

entire society from the emergence of Brāhma ical Hinduism to the fall of Buddhism. The Bhakti traditions of Vedanta's teachings and the life of its methodical expounders, the Ācāryas, have significantly altered India's sacred cult. From all the commentators on the Upaniṣads, Vedanta sutras, and Bhagavad-Gītā that have been authored by Ācāryas. The Bhakti movement brought forth such progress by incorporating Buddhism into classical Hinduism. Due to shortcomings in Brāhma ical-Hinduism and a sizable downside inBuddhism as a result of its protracted existence, this flaw was more severely exacerbated by the expansion and spectacular growth of Bhakti movements.

Contents

1. Introduction-Buddhism. 2. The Bhagavad Gita and its Teachings. 3. Early Buddhism and the Bhagavad Gita's Epistemology 4. The Metaphysics of the Bhagavad Gita and Early Buddhism 5. The ethics of the Bhagavad Gita and early Buddhism 6. Cause, Origin and rise of bhakti movement in India. 7. Bhagavad Gita, Bhakti movement and Indian Buddhism impact on Mass communication and Bibliography.

09. PANCHAL (Anu)
The Mahabodhi Temple Controversy: Contours of the Struggle for Possession and Ownership.
Supervisior: Prof. Pradeep Kumar
Th 27008

Abstract

This research work is a study of the Mahabodhi Temple Controversy and the contours of struggle for its possession and ownership amongst Buddhists and Hindus. The study examines the history of the temple from the very beginning. It starts with an analysis of various sects present in the Gaya Dharmakshetra before the arrival of Buddha, how Buddha got Enlightenment under the Bodhi tree, why the place became important for the Buddhists, construction of the Mahabodhi temple by Mauryan Emperor Ashoka, situation of the temple during Sungas, Kushanas, Guptas, Vardhanas, Palas, Turks, Mughals and finally the British. This thesis also examines the various other historical monuments and spots around the Mahabodhi temple and also analysis the writings of various Indian and foreign travellers on the temple. The arrival of the Mahant, getting *firman* from the Late Mughals, role of Alexander Cunningham, arrival of Anagarika Dharmapala, beginning of the Buddhist struggle for the control over the temple, role of Edwin Arnold, contribution of various national leaders and the Bodhgaya Temple Act of 1949 has been discussed in quite detail. Then the period after Independence has been studied. What was the role of Dr. B.R. Ambedkar, Surai Sasai, Bhante Anand and other Buddhist leaders in the struggle after Independence? The 1992 Bhikkhu Movement has been analysed. The study also discusses the amendments made in the Bodhgaya Temple Act in 2013, the role of leaders of Bihar like Lalu Prasad Yadav, Kali Charan Yadav, Rabri Dev etc., granting of World Heritage status to the temple, present situation of the temple, role of the Bodhgaya Temple Management Committee and activities of the Mahabodhi Society of India. This research work is based on the study of ancient texts, Hindu and Buddhist literature, archival records of the colonial period, judicial records and interviews of various important figures.

Contents

1. An Introduction to the life of Buddha 2. History of Mahabodhi Temple-I 3. History of Mahabodhi Temple-II 4. Buddhist Struggle for the Ownership and Possession of the Temple 5. Currents Situation of the Controversy. Conclusion and Bibliography

10. PANDEY (Vibhuti)
Art and Architecture of the Sakya Sachool of Buddhism in Uttarakhnad.
Supervisior : Dr. M. M. Rehman
Th 27009

Abstract

This research work is a study of the Art and Architecture of the Sakya School of Buddhism in Uttarakhand. The study examines the traditions of the Sakya School of Buddhism in Uttarakhand from the very beginning. It starts with an analysis of practices and traditions of Tibetan Buddhism, the geographical structure of Tibet, why the place became important for the Buddhists, Political interference of the Chinese, Present problem of the Tibet trying to save it boundaries. This thesis also examines the various other aspects of the Sakya School traditions and Buddhist society and cultures. The second chapter talks about Buddhism religion and faith, Customs pertaining to region around Uttarakhand, Socio-culture like festivals, cuisines, dressing styles. The third chapter focuses on the rise and fall of the Tibet, its early history and consolidation. This chapter also talks about the beginning of formation of empires in Tibet from 7th century onwards. Subsequent revolts, major wars and rise and fall of other empires are also included. This chapter also highlights the tough times in Tibet when it was broken into various small states. The 12th and 13th invasion by Mongols and their influence on the socio-political issues of Tibet is also mentioned. Some other important events include downfall of the Sakya until beginning of Dalai Lamas, advancement in The 14th century, genesis of Dalai lama, Introduction of 1st to 13th Dalai lama and the important events in their times, incursion of Gorkha and British India, The betrayal that Tibet had to face in 20th century, important treaties that Tibet made with foreign parties. The 4th chapter talks about the history of Uttarakhand itself. It also includes the history of Garhwal kingdom, its geography, demography and how Uttarakhand was when it was part of Uttar Pradesh. This chapter also includes the various important movement originated form Uttarakhand like the Chipko movement. The 5th and the final chapter focus on the Art and Architecture of the Sakya monasteries, the Sakya traditions and constructions done and preserved since the Sakya period. Finally, the conclusion gives a concise view of the important events mentioned in the thesis.

Contents

1. Introduction 2. Buddhist Society and Culture 3. The Rise and Fall of Tibet 4. History of Uttarakhand 5. Art and Architecture of Sakya School of Buddhism in Uttarakhand. Conclusion. Bibliography and Appendix.

11. प्रीति
पश्चिमी भारत में बौद्ध धर्म : एक ऐतिहासिक अध्ययन।
निर्देशक: अमरजीत लोचन
Th 27007

सारांश

पश्चिमी भारत में बौद्ध धर्म : एक ऐतिहासिक अध्ययन नामक विषय चुनने का मुख्य उदेश्य पश्चिमी भारत के (महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान) राज्यों में बौद्ध धर्म के इतिहास की उजागर केरने से था ।इसके अतिरिक्त सहीतीयक स्रोतों एवं एतिहासिक बौद्ध स्थलों की माध्यम से इन राज्यों का एतिहासिक अध्ययन केरने का प्रयास मात्र था। इस शोध प्रबंध के माध्यम से इन राज्यों में बौद्ध धर्म के आगमन व प्रसार-प्रचार के साथ-साथ , बौद्ध स्थलों की जानकारी उजागर केरने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त नवीन ज्ञात बौद्ध स्थलों ई उत्खनन क्षेत्रों के विषय में वर्णन केरने का प्रयास किया ज्ञ है , जो भविषय में नवीन शोध को बड़ावा देने में कारगर होगा। साथ ही पश्चिमी भारत में बौद्ध धर्म की प्राचीन जड़ें एक विस्तृत स्वरीप में पूर्वी भरा केडबल्यू समान होड़ केरती से प्रतीत होती है अत: यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है की बौद्ध धर्म ण केवल पूर्व में अति महत्वपूर्ण रहा अपितु पश्चिमी भारत में भी उशी प्रकार विधायन है बस आवश्यकता है केवल उजागर केरने के प्रयासों की । जिसका छोटा सा प्रयास इस शोध प्रबंध के माध्यम से किया गया है ।

विषय सूची

1. बौद्ध धर्म : एक परिचय 2. महाराष्ट्र में बौद्ध धर्म 3. गुजरात में बौद्ध धर्म 4. राजस्थान में बौद्ध धर्म 5. बौद्ध स्थलों की प्रासंगिकता व संरक्षण के उपाय। उपसंहार और ग्रंथ सूची ।

12. राजकुमार
मध्यकालीन पशिचमी भारत में इस्लाम का आगमन और बौद्ध धर्म का हरास: एक अध्ययन।
निर्देशक: डॉ. शालिनी सिंघल
Th 27010

सारांश

पश्चिम भारतीय उपमहाद्वीप में बौद्ध धमम प्राचीन काल से ही अपनी जड़े जमाए हुए था। इसका प्रमुख कारण समय-समय पर राजाओं द्वारा बौद्ध धमम को संरक्षण प्रदान करना था, साथ ही हम बाद के कालों में पुष्प रूप से गुप्तोत्तर काल में देखें तो भारतीय उपमहाद्वीप में कोई भी ऐसा शश्विशाली शासक नहीं श्वदखाई देता जो सम्पूणम उपमहाद्वीप को एक सूत्र में बाँध सके, अतः इसी कारण अनेक छोटे-छोटे शासकों का उदय हुआ और वे अपने साम्राज्य श्ववस्तार हेतु आपस में एक-दूसरे से उलझते रहे श्वजस कारण भारतीय उपमहाद्वीप में शासकों की शासन सत्ता क्षीण अवस्था में पहुँच गयी। साथ ही साथ इस समय पश्चिमी क्षेत्रों में बौद्ध धमम हेतु बने श्वबहार व मठ मुख्य रूप से व्यापाररयों के श्वलए आकर्मण का केन्द्र थे जो आवश्यकता पड़ने पर बैंकों की भूश्वमका भी श्वनभाते थे, श्वजस कारण बहुत से वाश्वणज्य व्यापार से जुड़े लोग बौद्ध धमम की ओर आकश्वर्मत भी हुए थे, क्योंश्वक उनको इससे आश्वथमक सुरक्षा भी प्राप्त होती थी साथ ही साथ बौद्ध धमम सामाश्वजक रूप से सबको बराबर का दजाम देता था अतः इस कारण भी श्वजन लोगों की आश्वथमक श्वस्थश्वत मजबूत हुई अपनी सामाश्वजक श्वस्थश्वत सुधारने के श्वलए बौद्ध धमम की ओर आकश्वर्मत हुए क्योंश्वक यहा वणम व्यवस्था को वरीयता नही दी गयी थी। इन्द्हीं कारणों से पश्चिम में अन्द्य धमों के साथ बौद्ध धमम भी व्यापक रूप से प्रसाररत हो रहा था। इसी समय अथामत् गुप्तोत्तर काल में पश्चिमी सीमाओं पर अरब आक्रान्द्ताओं ने आक्रमण प्रारम्भ श्वकया जो अनवरत इन क्षेत्रों में श्ववश्वभन्द्र रूपों में 12वीं 13वीं शताब्दी तक देखने को श्वमलता है। इन आक्रान्द्ताओं ने न केवल भारत की अतुल्य धन सम्पदा का वरण श्वकया बश्वल्क तलवार के बल पर भारतीय संस्कृश्वत को भी तार-तार करने का भरपूर प्रयास श्वकया श्वजससे कुछ से श्वहन्द्दुओं व बौद्धों कुछ ने भय व लालच यस आकर इस्लाम भी ग्रहण श्वकया परन्द्तु यह संख्या सीश्वमत थी।

विषय सूची

1. भूमिका 2. तत्कालीन पशिचमी भारत की सिथती 3. बौद्ध और इस्लाम धर्म की मूल प्रवृति 4. हिन्दू और बौद्ध का इस्लामिकरण 5. इस्लाम का प्रभाव व बौद्ध धर्म का हरास। उपसंहार और संदर्भ ग्रंथ सूची ।

13. Rawat (A Raju)
Conversion from Buddhism to Islam: a comparative study of early medieval Sindh and Kashmir.
Supervisor: Dr. Ranjana Rani Singhal
Th 26567

Abstract

Since the beginning of recorded history, chronicles of Kashmir and Sindh have already been written to some extent. The oldest stories in this regard are those that resemble the Rajtarangini and Nilmat Purana. Since the 6th century CE, when kingdoms were established in Kashmir and Sindh, important historical knowledge has been available in the form of literature. Little is spoken about the earliest-to-earliest historical periods in the narratives that are available, largely because there aren't any sources. This study is an attempt to understand this distant past using important sources including geological data and archaeological evidence. This literary research work gives plenty of potential for critique and additional study in this area. The fundamental chronological constraints of this study are the extensive Arab hegemony in Sindh and Kashmir from 711 AD to 1025 AD. Before addressing additional concerns like conversion and the impact of conversion on the populace of India, it is necessary to first identify the non-Muslim traditions and sects of Sindh and Kashmir accurately. Given the frequent misclassification of these non-Muslim religions by contemporary researchers, it is even more urgent. It will be asserted that this emphasis has obscured significant social dynamics. This thesis has several goals, one of which is to present a thorough and in-depth analysis of religion in its social and historical context. The modern component of religion inside the confines of these two regions is the primary subject of this study. Its focus on the subject is limited to the underlying causes of religious conversion, their effects on the local social structure, and how understanding these dynamics in a contemporary and appropriate context might contribute.

Contents

1. Introduction 2. Understanding of proselytism (Religious conversion) and historical background of Sindh and Kashmir 3. Earliest accounts of conversion in India: with special reference to Sindh and Kashmir. 4. Comparative understanding of conversion from Buddhism to Islam. 5. Conclusion. 6. Primary sources and Bibliography

14. SHAKYA (Anusha)
Buddhist Reformative Ethics and Juvenile Delinquent Rehabilitation: A Case Study.
Supervisor: Prof. Ranjana Rani Singhal
Th 26568

Abstract

Rather than indulging in extensive research on the vast expanses of Buddhist Philosophy implementing the sermon of the Buddha to address a concurrent social evil is, in my opinion, the ideal way of imparting absolute justice to the legacy of one of the most enlightened individuals that have graced us with his presence. Though such research, being a complex amalgamation of analysis of social evil and in-depth understanding of Buddhist Philosophy, is certainly arduous but the conclusions that may bring forth ground-breaking results shows promise of being worth the effort. The proliferating evil of Juvenile Delinquency and methodology to address it, as issue of great importance, is in dire need of amendment and enhancement

through inclusion of procedures based on Buddhist Ethics. Buddha's teachings have exhibited a remarkable capacity for adaptability and resonance with people in various historical periods and cultural contexts. Buddha advocated for rehabilitating criminals and putting them on the journey towards virtue rather than punishing them. In the following thesis entitled— Buddhist Reformative Ethics and Juvenile Delinquent Rehabilitation: A Case Study,‖ we will begin with developing an understanding of Juvenile Delinquency in light of Juvenile Justice System of India. We will then plunge in to the Buddhist insights on criminal psychology and approach of punishment along with Buddhist Ethics which are, in themselves, reformative in nature. We will then analyze the in- place legal reformative course and existing rehabilitative process, assisted by documented records and demographic details of Juvenile Delinquents. Imparting relevance to the whole journey of putting together the scrutiny of said social evil, reconciliation with Buddhist Ethics and contemporary justice system, we will strive to formulate a code of conduct and ethical action plan for Juvenile Delinquent so that the youth of India may help to build the perfect society that our founding fathers envisioned.

Contents

1. Introduction 2. Understanding “Juv Delinquency” in light of Juvenile justice system of India 3. Buddhist understanding of criminal Psychology, theory of punishment and feformative ethics 4. Serutinizing the cases: feformative course and rehabilitation process 5. Conclusion: devising a code of conduct and action plan in a Buddhist way. 7. Appendices and bibliography.

15. SHARMA (Mohit)
Sthiramativiracitabhasyasahita: Buddhist Notion of Consciousness and Analysis.
Supervisor: Dr. Satyendra Kumar Pandey
Th 27205

Abstract

It is obvious, that the terminology mentioned in Madhyāntavibhāgaṭīkā (themmentary is rendered by Sthiramati as well as Vasubandhu with respect to original treatise of Maitreyanātha’s Madhyāntavibhāga) is not fit very well to the Pañcaskandhakavibhāṣya and the Triṃśikābhāṣya. However, this is because the two scholars hold different view points. It should be kept in mind that Sthiramati take its ṭīkā a time corroborates the fundamental model of three types of vijñāna comprising of pravṛtti vijñāna, kliṣṭa manovijñāna and ālaya vijñāna. Furthermore, Martin Delhey also point out his remark: “It seems that Sthiramati is in this text passage rather led to the surprising statement by Vasubandhu, the author of the Madhyāntavibhāgabhāṣya. It is true that Vasubandhu in his bhāṣya commentary only mentions the pravṛttivijnānas without giving their exact number. However, the absence of the kliṣṭaṃ manas in this place of the bhāṣya can very well be understood in such a way that Vasubandhu wants to understand the kliṣṭam manas as a seventh pravṛttivijnāna.” In this context, another passage of his ṭīkā, more precisely confirms the assumptions that Vsubandhu of this text has no problem, or even suggests, subsuming the kliṣṭa manovijñāna under the pravṛtti vijñāna.130 Although he makes a difference between the kliṣṭa manovijñāna on the one side and a combination of remaining six vijñāna on the other side in yet another passage of his ṭīkā.131 The similar treatment towards the terms can be seen in the masterpiece Triṃśikā of Vasubandhu. In terms of flourishing the philosophy Sthiramati elegantly classifies the vijñāna in his commentary as well as arranges the vijñāna order wise.

Contents

1. Introducation of the yogacara-vijnanavada philosophy 2. Introduction and general remarks on sthiramati and his works 3. Consciousness: Using the Viewpoint of Sthiramati's Trimsikabhasya. Conclusion, index of sanskrta terms and bibliography.

16. SHREE (Aparna Erra)
Revival of Buddhism in Mainland China After the Cultural Revolution.
Supervisor: Dr. Satyendra Kumar Pandy
Th 26561

Abstract

This thesis looked at different parts of Chinese Buddhism that are still very important in the world today. Even though it was criticised more than once, the Buddhist principle of harmony is strong enough to stand up to the strange. So, it was only natural that a link was made between the sangha and society again. Buddhists should take part in military training and war: to promote the idea of a nation and state, to change the rules of Buddhism, and to bring Buddhism back to life. So, the Chinese public was impressed by Buddhists who stand side by side in the crisis. These moments made Chinese people realize the importance of Buddhism in China and in his life. Also current Chinese government worked upon political attitudes like trust, it has big effects on politics. It lets the government work by making sure that Buddhist people do what the government tells them to do. Chinese government strategies is different than any other country because of this, it's hard to compare China to other countries. In sum, this thesis will set the timeline of Buddhism and its principles or concepts in China as the central axis, and utilize the facts to analyse the modern Buddhist concepts by the utilization of traditional one like charity, forgiveness, Non-violence, and Chastity etc. In Modern china one Child policy was mandatory for everyone because of population boom of China. As a result, this forceful implement of one-child policy decreasing the population of working force or labour force for industries, agriculture, manufacturing, etc. but in current scenario Chinese government initially implemented two-child policy now three-child. In Buddhism taught that Chastity or Brahma-carya should be insight rather than this forceful implementation. There are various examples which show the devastating result of forceful implementation of Broder concept like Brahma-carya. This is just an example which shows the importance of Buddhist concept in our day to day life, but also there is n number of Buddhist concept lies in its which shows the real path to the any society, political party or a most populous nation like china too. It is important in every way both inside and outside of China. They can't deny that what they do, think, and say has an effect on the Chinese people. In 2015, at the BAC's ninth national congress, promoting Chinese Buddhism around the world was officially named as a key activity. Chinese Buddhism is told to "go out" of China and tell the "Chinese story well" to the people of other countries so they can understand China's achievements and peaceful goals.

Contents

1. Intorduction 2. Changing Buddhism in mainland China 3. Buddhism as a tool of political basis in mainland China 4. Revevance of Buddhism in Society in contemporary China 5. Economic and commercial activities of Buddhist institutions of China. Conclusion.

17. शुक्ला (शेलेन्द्र कुमार)
कुशीनगर जनपद स्थित सनातन एवं बोद्ध-धर्म स्थल: एक सांस्कृतिक अध्ययन
निर्देशक : डॉ. रंजना रानी सिंघल
Th 26569

सारांश

भारत में आदिकाल से धर्म के प्रचार एवं प्रसार की परंपरा रही है । वैदिक धर्म । में भी धर्मशास्त्रों के माध्यम से एसे नियम ब्रय गए हैं जिनसे धर्म की प्रचार-प्रसार का कार्य किया जा सकता है। एतिहासिक ड्रिसती से बौद्ध धर्म ने सर्वप्रथम धर्म के संघ –स्वरूप की प्रतिष्ठपना की ओर उसको एक अंन्त्रराष्ट्रीय स्वरूप दिया ।बौद्ध धर्म ने उपेक्षित एवं स्ंतपित मानवता को गले लगाया और उन्हे अपने जीवन की चरितार्थता का अवबोध कराया । बौद्ध धर्म के साथ दर्शन, चिकित्सा, ज्योतिष , मूर्तिकला , विहार-वास्तु एवं स्थापत्य क्ला आदि अन्यन्य भारतीय कलाएँ अपनी उत्कृष्टता ओर पहुंची। बौद्ध स्थलों के पुरातितव्क उत्ख्नोन से प्राप्त प्रमाणों तथा बौद्ध स्मारकों में उपलब्ध कलाकृतिओं एवं तकनीकी विशेषताओं और प्रमाणों के अध्ययन से यह पूर्णत : स्पष्ट हो जाता है की एक प्रगतिशील विचारधारा को प्रश्रय देने वाला बौद्ध धर्म प्रारम्भ से ही अत्यधिक सहिष्णु एवं सर्व धर्म संभव के सिद्धांत को साथ लेकर आगे बड़ा और इसी कारण से अपने उद्गम स्थल से इसका चतुर्दिक विकास हुआ तथा देश देशांतर में लगातार इस मत का पालन होता रहा । इन्ही सब कारणों से भारतवर्ष को जगद्गुरू का प्रतिष्ट्रा पूर्ण गौरव प्राप्त हुआ । आज भी विभिन देशों के तीर्थ –यात्री भारतवर्ष से उत्तर प्रदेश के बाउध तीर्थों की धर्म यात्रा और यहाँ के धुली की वंदना केरने पहुँचते रहते है और यात्रा केरके अपने को धनय समझते है।

विषय सूची

1. भूमिका 2. कुशीनगर का भौगोलिक अध्ययन 3. कुशीनगर का एतेहासिक अध्ययन: विदेशी यात्रियों एवं सनातन और बौद्ध ग्रन्थों के संदर्भ में 4. कुशीनगर का पुरातात्विक अध्ययन 5. कुशीनगर जनपद में स्थित बौद्ध और सनातन धर्मस्थल 6. निष्कर्ष. 7 संदर्भ सूची एवं परिशिष्ट.

18. सिंह (अरुण प्रताप)
भारतीय धार्मिक परंपरा की परिष्ठभूमि में शांति एवं अहिंसा की बौद्ध अवधारणा ।
निर्देशक : डॉ. रंजना रानी सिंघल
Th 27011

सारांश

प्राचीन काल से भारत धार्मिक दृष्टि से विश्व का प्रमुख केंद्र बिन्दु रहा है। जिसका प्रमुख कारण था भारत ही सम्पूर्ण विश्व भर म्विन वीएच देश था , जहाँ पीआर अनेकों वैशिव्क धर्मों का उद्भव हुआ जिसमें सन्ति व अहिंदा ने ओरमुख योगदान था इसकी प्रमुख कल्याण मानव उत्थान , आदि में अपना प्रमुख योगदान था इसकी प्रमुख प्रवृतियाँ , जीवन विधाओं के संघर्ष और समन्वय के द्वारा भारतीय इतिहास की प्रगति एवं संस्कृति का विकास हुआ। इसी क्रम में ईसा पूर्व छठि शताब्दी का काल सम्पूर्ण विश्व में व्यापक स्तर पीआर धर्म सुधारों के साथ साथ कुछ धर्मों दे उद्भव काल के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि इस समय सम्पूर्ण विश्व में अनेकों महापुरुषों ने जनम लिया जैसे की इस्लाम धर्म के प्रचारक पैगंबर मोहमद साहब , जैन धर्म के महावीर स्वामी व बाउध धर्म आदि। इसी कारणवस छट्ठी शताब्दी के काल को भारतीय इतिहास में बौद्धिक क्रांति अथवा शांति व अहिंसा के नाम से जाना जाता है । वास्तव में यह कहा जाना की इस धार्मिक परिवर्तन का व धार्मिक सुधार आंदोलन का सम्पूर्ण श्रेय केवल बाउध धर्म को ही जाता है- यह सतय से कोशों दूर है । क्योकि हम धार्मिक सुधार या धार्मिक परिवर्तन मियां अनय धर्मों के योगदान को नकार नहीं सकते है –क्योंकि ध्रिमक कर्म का यह सुधार यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो यह सुधार आंदोलन के शुरुआत कहीं न कहीं सनातन धर्म से मनी जानी चाहिए । तत्पश्चात अनय धर्मों का क्रम आना चाहिए । परंतु यदि शांति व अहिंसा के धार्मिक संदर्भ पीआर बात की जाये तो वास्तव में इसको आँय धर्मों की अपेक्षा बाउध धर्म ने अधिक सात्विक व वास्तविक अर्थ प्रदान किया था।

विषय सूची

1. शांति व अहिंसा की अवधारणा 2. शांति व अहिंसा की धार्मिक परंपरा का साहितियक अध्ययन 3. सन्ति व अहिंसा–जैन व सनातन दृष्टिकोण में 4. बौद्ध, जैन व सनातन अध्य्न का तुलनात्मक अध्ययन 5. उपसंहार 6. संदर्भ ग्रंथ सूची ।

19. सिंह (अंकित कुमार)
अशोक के शिलालेख का समीक्षात्मक अध्यन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ।
निर्देशक: रंजना रानी सिंघल
Th 26571

सारांश

मेरा यह शोध प्रबंध मेरा अपना मौलिक कार्य है, जिसमें मैंने अशोक के अभिलेखों में लिखी शिक्षा और उसके द्वारा किए गए कार्यों से समाज में पड़ें प्रभाव की भूमिका में बात की है इसके अलावा अपने शोध करी की समस्या , उदेश्य , शोध संबंधी प्रश्न, परिकल्पना महत्व,शोध पद्धति और शोध संरचना का वर्णन किया है।इस शोध विषय की चुनने के पीछे मेरा उदेश्य बचपन में पिताजी और अपने विधालय के शिक्षकों द्वारा सम्राट अशोकऔर उनकी दी गई शिक्षाओं का बार बार बताया जाना था । मिझे सबसे ज्यादा जिस बात ने प्रभावित किया वह थी अशोक का ह्रदय परिवर्तन । एक क्रूर सम्राट किस तरह चंडाशोक से प्रियदर्शी सम्राट अशोक बना और उसके धम्म ने न सिर्फ भारत अपितु विश्व की भी प्रभावित किया है। अशोक को और जानने की तीव्र इच्छा ने मुझे इस शोध विषय की चुनने के लिय प्रेरित किया।

विषय सूची

1. भूमिका 2. अशोक के समय का इतिहास, अभिलेखो का परिचय एवं प्राप्ति स्थान 3. कलिंग युद्ध के उपरांत अशोक के अन्तःकरण में परिवर्तन एवं घम्म की स्थापना 4. अशोक के शिलालेख में वर्णित सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का तत्कालीन समाज में प्रभाव. 5. अशोक के शिलालेखों में सारगर्भित चिंतन की समीक्षा 6. अशोक के धम्म और शिलालेखों की वर्तमान में प्रासंगिकता 7. निष्कर्ष 8. संदर्भ ग्रंथ सूची

20. SINGH (Pushkar)
Remnants of Buddhism in Uttarakhand: A Case Study of Acculturation and Assimilation.
Supervisior: Rajiv Kumar Verma
Th 26570

Abstract

Uttaranchal finally separated from uttar pradesh and became 27th state of India in November 2000. Later, in 2007, it was changed to Uttarakhand-meaning northern region or northern country. It is also known as the abodes of the gods and goddesses as there are multiple numbers of pilgrimages. The Uttarakhand has been mentioned in the Skanda Purana and Mahabharata as Kedarkhand and Manaskhand. Numerous festivals and fairs are celebrated thoughout the year in their honour to bring peace prosperity, Protection etc. they mainly offer fruits, vegetable, milk, ghee (Pruified butter) and homemade sweets etc., to their deities. While in the festivals of the tribal consumption of local beer/ chakti is a must. Due to its geographical factors for the sages for deep meditation in ancient times. In the later centuries, the flow of british merchants for logs, Meditation plants and other valuanle forest items disrupted nature. Now efforts are being made to restore the pristine forest. With the support of archaeological evidence, people have inhabited this region since the paleolithic and megalithic ages. Some earliest inhabitants were khas, akas, kol-munds, Naga Pahadi, Hunas, Kiratas, Gujjars, Tharu, Buxas, Jaunsari, Bhotiya

(Shauka), Raji and Aryans. Finally, in conclusion we can say that the influence of Buddhism has been in Uttarakhand since the Buddha's time, Which decreased over time in the plain ares but continued in the Himalayan region.

Contents

1. Introduction 2. Brief Historical and Cultural background of Uttarakhand 3. Border Trade with Ngari Khorsum (Western Tibet). 4. Tracing the origins of the bhotiya community. 5. Journey of a Hero from Nomad shepherd to Mahapandit 6. Buddhist settlement in Uttarakhand after 1959. 7. An immortal love story of Rajula and Malushahi: a reflection of cultural relation between Tibet and Uttarakhand. 8. Appendix 9. Photographs, 9. Conclusion. 10. Glossary and Bibliography.

21. सोनू
बौद्ध कला एवं वास्तुकला में वेदिकाओं का पुरातात्विक एवं साहित्यक अध्ययन (महाबोधि मंदिर के विशेष संदर्भ में) ।
निर्देशक: डॉ. सुस्मिता
Th 27207

सारांश

महाबोधि मंदिर एक जीवंत स्मारक है जहां आज भी लोग बुद्ध के प्रति श्रदापूर्वक प्रार्थना केरने के लिए आते है । यहां पुजा की परंपरा सदियों से जारी है जैसा कि अशोक के स्तम्भ शिलालेखों में दर्ज है और सांची और भरहुत की नक्काशी में भी चित्रित किया गया है साथ ही चौथी और सातवीं शताब्दी के चीनी यात्रियों सहित सदियों के दौरान अपने भक्तिभाव को प्रकट किया है और अपनी यात्रा के साक्षी के रूप म्विन वेदिकाओं पीआर लेखों की अंकित करवाया है। यह स्थल कई शताब्दियों से तीर्थ यात्रा केआर रहे लोगों के लिए अत्यंत म्हत्वपूर्ण तीर्थस्थल बन गया । कई शताब्दियों के दौरान इस अमूल्य विरासत को संरक्षित करने के लिए विभिन देशों के लोगों के प्रयासों का विल्क्षण उदाहरण प्रस्तुत करता है । इस मंदिर का इतिहास म्यांमार, श्रीलंका , थायलैंड और भारत के शासकों और समान्य लोगों की भक्ति का एक उत्कृष्ट प्रतिबिंब है जिन्होंने सदियों से इसकी मरमत करवायी ताकि भावी पीढी के लिए संरक्षित किया जा सके। इस शोध –प्रबंध का उदेश्य बोधगया की वेदिकाओं पीआर उत्कीर्ण सभी जातक कथाओं के विवरण से लोगों को अवगत करना है । चौथा अध्याय इन जातक कथाओं के विवरण पर जी आधारित है और इसके साथ साथ वेदिकाओं पर उत्कीर्ण विभिन बौद्ध प्रसंगों, प्रतिकों और अनय प्रकृतिक दृश्यों एवं प्रतिकों का विवरण दिया है।

विषय सूची

1. बौद्ध कला एवं वास्तुकला 2. बौद्धगया का समान्य परिचय 3. वेदिका का तात्पर्य एवं इसका क्रमिक विकास 4. प्राचीन वेदिका पर विभिन अलंकरण। उपसंहार, संदर्भ-ग्रंथ सूची और चित्र सूची।

22. THAO (Nguyen Phuong)
Buddhist Meditation as a tool for Sustainable Healthy Society: a Case study.
Supervisor: prof. Subhra Barua Pavagadhi
Th 27012

Abstract

Compared to the last century, there has been a steady decline in the observance of religious, ethical, and moral principles and ideas. The greed for money and possession, i.e., great wealth, the desire to control other human beings, living things and the environment; both politically and economically, have created distressful features of the modern civilization in recent years. Human beings tend to fulfil their

material needs through machines and scientific tools these days. Ironically, it is this modern materialism that also brings heavy burden and suffering to humankind, which is greater than ever before. It is analogous to a sharp knife; it can be a useful tool or a lethal weapon, depending on the way we use it. In this so-called modern society, most people are, indeed, infatuated by scientific and technologically advanced products. Moreover, it is the pursuit of material satisfaction that causes people to always regard everything as permanent and everlasting, which they mistakenly define as the so-called ***success and happiness***. The Buddha teaches that the mind plays a very important role in our lives. It is the mind which leads us to happiness or suffering. If we let our minds indulge in *kāmesu kāmasukhallikā* (the pleasure in sense pleasures) which conduce us to *hīno* (low), *gammo* (vulgar), *pothujjaniko* (worldly), *anariyo* (unworthy). We have to face all kinds of *āsava* (defilements) every day. Otherwise, if we diligently cultivate meditation, our minds come to be trained, they will help us restrain ourselves from the roots of sufferings, which are *lobha* (greed), *dosa* (hatred) and *moha* (delusion). How does Buddhism contribute to the spiritual lives of human beings in modern society, is the question which needs to be answered. This research attempts to link meditation in Buddhism and the scientific and technological advances, in order to help modern man lead a peaceful and happy life, in other words, to sustain a healthy society. With such purposes, this study will investigate how Buddhist meditation can be used to improve spiritual life in modern society.

Contents

1. Methods of Buddhist Meditation 2. Meditation and Ethical Education 3. Meditation and Social Harmony. 4. Mediation and Sustaining Mental 5. Conclusion. and Bibliography.

23. TRIPATHI (Ashish Kumar)
Discovering Buddhism in Colonial India: Approaches and Methodology in Archaeology and Literature.
Supervisor: Dr. Nirja Sharma
Th 27013

Abstract

Upon exploring information with different approaches and methodology adopted in study of Archaeology and Literature over Buddhism, the results indicate that—Buddhism‖ based on the teachings of Buddha, prevailed in Indian sub-continentas a religion, faith and philosophy in the 6th century B.C It is an undisputed fact that Buddha fought against ritualism, superstition and hero-worships,dependence on a god, and the elaboration of cosmologies,refusing to even call himself the head of the Sangha. His teachings were in accordance with the expectations and the capabilities of his audience. He substituted righteousness, a concern for mass welfare, and control of mental aspirations, thoughts and emotions. We also find that Buddhism became a subsidiary religion, a form of Hinduism that became un-influential after Mauryan Emperor Asoka in India due to factors like entrance of cosmology, the god and ritualism into Buddhism. The data indicate that Buddhism in India had its gradual decline in influence as a religion and way of life by the second millennium CE followed by its total disappearance or going in a hybernation state. By the thirteenth to fourteenth century, Buddhism had disappeared.—Buddhism‖ as a religion undergone a decline and virtually extinct during 18th Century, in its place of origin in Indian sub-continent. Though for some time Buddhism had been practised separately, opposing caste and rejecting the "Vedas." —Buddhism‖ could not coexist with —Brahmanic Hinduism‖ in India nor could claim its hegemony unlike other

religions.The whole conception of Buddhist teachings was expected to die away. The prevailing contradictions between Buddhist and Brahmanic teachings held latter to drive out the former from sociological order.It failed to base itself in the practical aspects of popular life. The study reveals that the main reason for decline of ―Buddhism‖ was controversies arising due to Buddha‗s teachings and messages of peace, non-violence and call for giving equal status to lower caste people in society. The controversies were raised by the then Brahmin cult in India who appeared as rivals and opposed the same. Buddhism, though dis-appeared, it remained in India in myth and remained within Buddhist monasteries during a long span of time.

Contents

1. Introduction 2. The Encounter of Buddhism with west and Western Culture 3. The Discovery of Buddhist Archewilogical trails: exploration, Identification and Excavation of Buddhiat sites in colonial India. 4. The Indian Pioneers of Buddhism and Buddhist revivalist movement in Pre and Post Colonial Indian 5. Discovery of the land of "Mahapariniry an: a case study of the identification of Kusinagar Conclusion and bibliography.

24. TUAN (Tran Anh)
Noble Eight Fold Path and its Practical Values: A Critical Study.
Supervisor: Dr. Indra Narain Singh
<u>Th 27014</u>

Abstract

The research work developed through different chapters is mainly based on Buddhist literature. Lord Buddha, more than twenty-five centuries ago, has provided the mankind with the required deeper knowledge and higher wisdom for the welfare of all beings. He has also demonstrated a practical method to eliminate all the evils and to be liberated from all suffering. The Buddha dhamma provides us with a way of attaining that state of Nibbanic freedom from sorrow, whence we, like the Buddha and His Arahats, need never emerge again. For, through Buddha's preaching of dhamma, recognizing first, the Four Noble Truths, we gradually enter upon the Eightfold Noble Path, and are progressively brought from illusoriness to reality. The Buddha has explained clearly that the love of money and the desire or craving for wealth are some manifestations of lobha (a pali word, meaning greed, craving, attachment, etc.) which is the cause of all suffering. He also laid down a systematic method known as the Eightfold Noble Path for the total destruction of lobha, which arises in the mind as a concomitant of the mind. When greed or craving is totally destroyed and uprooted from the mind, the highest nobility and the everlasting bliss will be attained in this very life. The Buddha's view on social structure message of goodwill and understanding to all beings is a universal message. The world today needs this noble message more than ever before in the history of humankind. Buddhism as a religion is the unique exposition of the absolute truth which will show man how to live in peace and harmony with his fellow beings. Since the Eightfold Noble Path is well laid down by Lord Buddha, and it has been trodden by countless noble persons in the past, it is the surest practical way to lead us to the highest nobility and to the highest bliss in the whole life. The Eightfold Noble Path is a Path to be trodden. The path is something essentially practical. To know and experience this truth one

must tread the path. This path contains a careful and wise collection of all the important requisites necessary for the spiritual development of man. The Eightfold Noble Path is unique to Buddhism and distinguishes it from every other religion and philosophy. It is the Buddhist code of mental and physical conduct which leads to the end of suffering, sorrow and despair; to perfect peace, Nibbana. If one understands the Buddha's teaching, and if one is convinced that his teaching is the right Path and if one tries to follow it, then one is a Buddhist. Buddhism is a way of life, and what is essential is following the Eightfold Noble Path. The path or way that leads to the cessation of suffering (Nibbana) is the Eightfold Noble Path, consisting of eight constituent factors, which are more simply represented by the threefold training in morality, concentration and wisdom.

Contents

1. Central Aspects of the Buddha's Teaching 2. The Four Noble Truths in Buddhism 3. The eightfold noble Path in Buddhism 4. The Three Factors of Concentration 5. The Two Factors of Wisdom 6. Conclusion and Bibliography.

25. उर्जेश कुमार
बौद्ध ग्रंथों में वर्णित बुध की अंतिम यात्रा : एक एतिहासिक विश्लेषण।
निर्देशक: डॉ. कृषण मुरारी
Th 27015

सारांश

बुद्ध के जीवन की अंतिम यात्रा का इतिहास में अत्यंत म्हत्वपूर्ण स्थान है। इस यात्रा के क्रम में उनके प्रवर्तित अंतिम शिक्षा , अंतिम शिषय, अंतिम भोजन , और उनके द्वारा विहार किये गए अंतिम एतिहासिक स्थलों की विवेचना मिलती है। प्रस्तुत शोध की माध्यम से इन्हीं सब महत्वपूर्ण मुदों पीआर विचार व्यक्त कैरा गया है। बुद्ध के पूर्व की पुनव्यारख्या केरने की कोशिश की गई है । हम पहले व्याख्या कर चुके है की इस सामी होने वाला परिवर्तन कोई आकस्मिक घटना नहीं थी बलिक लंबे समय से चले आ रहे सामाजिक –आर्थिक असंतुलनों का क्रमिक परिणाम थी । वैश्विक स्तर पर भी दुनिया के सभी भागों में जनता रुदीवाद, बाहाडंबर , कर्मकांड और अंधविश्वासों में जकड़ीं हुई थी जो परिवर्तन के लिय उदेलित हो रही है। इस समय भारत में समाज रूढ़ियों , पुरोहितों के व्यभिचार, धार्मिक कर्मकांड के कारण धर्म की मूल भवन का स्वरूप धुंधला पद रहा था और समाज ब्राह्मणों के मयजल में घिरता जा रहा था। इस समसत कार्टनों से जनता के बीन में संतोष के भवना प्रबल हो रही थी। इसी सामी दुनिया के अलग अलग हिस्सों में भी क्रांतिकारी विचारकों का प्रादुर्भाव देखने को मिलता है।इन क्रांतिकारी विचारकों ने शिक्षाओं और उपदेशों के माध्यम से कर्मकांडों और बाहाआडंबरों पर सवाल खड़ा करते हुए मानव समाज के उठान के लिए मार्ग प्रशस्त किया हमने पिछले अध्यायों के माध्यम से बुद्ध से जुड़े हुए विभिन पहलुओं और उनसे जुड़े हुए प्रमुख स्थलों की आधुनिक सिथती आदि के बारे में व्याख्या की है।

विषय सूची

1. बौद्ध धर्म और बौद्ध साहित्य 2. महापरिनिर्वाण सूत्र से बुद्ध की अंतिम यात्रा : एक विश्लेषण 3. बुद्ध की अंतिम यात्रा से संबन्धित महत्वपूर्ण एतिहासिक स्थल 4. बुद्ध की अंतिम यात्रा: वैशाली और कौशी नगर का एथीहसिक एवं आधुनिक महत्व 5. उपसंहार और संदर्भ ग्रंथ सूची।

26. VAN (Doan Quang)
Buddhist Perspective on Healthcare.
Supervisor: Prof. Subhra Barua Pavagadhi
Th 27016

Abstract

Studies the Buddhist role and perception of healthcare issues. It investigates the Buddha‟s teaching and approaches to the mental and physical well-being of humans. The objective is to address the need for diverse and innovative remedies beyond medical science, which have advanced throughout history but still face increasing challenges in curing suffering (dukkha) and its causes. The research locates its scope in examining the Buddhist texts and considers the teaching of the Buddha from the medical perspective. It aims to study health problems and elucidates the role of Buddhist healthcare without a detailed description of specialised medicine. The thesis briefly overviews Buddhist teachings, philosophy, and perspectives on diagnosing and remediating mental and physical diseases. Therefore, whatever this thesis contributes is based on the Buddha‟s teaching and his perspective on medical issues. Healthcare is often considered a priority in all areas of social life. Medical science emerged as the epitome of treatments but applied only to the physical dimension of a person. With the Buddha‟s realistic approach and medical diagnosis to the existential issues of dukkha of human beings (The Four Noble Truths), the beginnings of Buddhism were closely intertwined with medical practices. Buddhism and medical science are closely related to aspects of healthcare on both the body and mind. The thesis shows that, instead of following the fluctuations of disease in modern medical problems, Buddhism delves into the practice of a healthy, ethical life as an effective way to prevent diseases and as a suitable solution to improve people‟s health. Therefore, the thesis aims to introduce the basic teachings and philosophy of the Buddha that have a bearing on the medical approach and provides an overview of how healthcare became an integral part of Buddhist tradition when Buddhism spread throughout Asia. It investigates the role of healthcare in the Buddhist community and discusses the ethical values that underline Buddhist concern for the sick as recorded in the Pāli Sutta and Vinaya. It also explores what scholars have described as a „malaise‟ and something lost in contemporary medicine. The thesis offers reflections on how Buddhism may contribute to present healthcare issues. In this concern, the author systematically explores the Buddhist approach to medical issues, problems of suffering, disease, and healthcare, attempting to look for long-term solutions to people‟s perfect health as reflected and promoted in the Buddhist scriptures. The author suggests an approach to healthcare through understanding and practising the teachings of the Buddha. The author considers the traditional Buddhist approach to suffering (dukkha) and diseases of old age and death (jarāmaraṇa) as an answer to healthcare resolutions. This functions as an overall system of Buddhist healthcare.

Contents

1. Introduction 2. Healthcare in Buddhist Scriptures 3. The Medical method of the Buddha’s Teaching 4. Spirtual Dimension of Healthcare in Buddhist World 5. Buddhist ideal of Well-being and Healthcare 6. Conclusion and references.

M.Phil Dissertation

27. आनंद
नालंदा विश्वविधयालय की शिक्षण परंपरा के परिप्रेक्ष्य में नई शिक्षा नीति का आलोचनात्मक अध्ययन।
निर्देशिक: प्रोफ. इन्द्र नारायण सिंह

28. ARCHNA MAVI
Comprative study of Buddhist philosophy and Adi Shankaracharya's Philosophy.
Supervisor: Dr. Nirja Sharma

29. CHAHAL (Parveen)
Philosophy of Tilakkhana.
Supervisor: Dr. Susmita

30. DWIVEDI (Krishna Kumar)
The early History and Evolution of Buddhism in Gandhara.
Supervisor: Dr. Susmita

31. Harsh Kumar
A Comparative analysis of ancient and modern Buddhist views on law and business system.
Supervisor: Dr. Nirja sharma

32. Pandey (Naredra Kumar)
Role Played by Buddhist Meditation in Mental Health.
Supervisor: Dr. Kamakhiya Narain Tiwari

33. Panyalertsinpaisarn (Kongpop)
The development and significant role in the history of Buddhism in the early period to Thailand (during the 1st -7th Centuries AD.
Supervisor: Prof. (Dr.) Indra Narain Singh

34. पारीक (सुचिता)
राजस्थान में बौद्ध धर्म का प्रसार (300 ईसा पूर्व से 900 ईस्वी) ।
निर्देशिक: डॉ .कामाख्या नारायण तिवारी

35. Pathak (Saurabh)
A Critical Study of the Concept of the Human rights in the context of Buddhist Ethics.
Supervisor: prof. Indra Narain Singh

36. RANGA (Nancy)
An analytical Study: a Perspective of venerable sangharakshita towards modern Buddhism.
Supervisor: Prof. Subhra Barua Pavagadhi

37. सिंह (दिनेश)
तिब्बती बौद्ध आप्रवासियों का हिमाचल प्रदेश पीआर प्रभाव: धर्मशाला एक अध्ययन (1960-2000 ईस्वी)।
निर्देशिक: डॉ . रंजना रानी सिंघल

38. SINGH (Raghvendha Pratap)
An archeological and Cultural study of diminishing of Buddhism in the North West frontier of India.
Supervisor: Dr. Nirja Sharma

39. SOKNE (Yen)
MAHA Ghosananda of Cambodia and his dhammayietra: An analytical study on Nonviolence.
Supervisor: Dr. Susmita

40. Yadav (Deny)
A Path to Libreration based on Apannaka Sutta Critical Study.
Supervisor: Dr. Satyendra Kumar Pandey